आत्मोन्नति के लिए विशेष स्मृतियां

1. मैं परमपवित्र फरिश्ता हूँ..... मेरे मस्तक से विश्व में चारों ओर पवित्रता की असंख्य किरणें प्रवाहित हो रही हैं। सारे संसार को पवित्रता के बायब्रेशन दे रहा हूँ, अपवित्रता का किचड़ा भस्म होता जा रहा है....। सर्व आत्माएं पवित्रता, सुख, शान्ति से संपन्न होती जा रही हैं.....।

2. मैं इस देह में अवतरित परम पवित्र आत्मा हूँ ..... मस्तक में विराजमान चमकता हुआ सितारा हूँ .....मेरे चारों ओर पवित्रता की लाईट माईट फैल रही है....., देह से अलग हूँ, देह की मालिक हूँ, देह को चलाने वाली हूँ, देह से न्यारी हूँ, मैं जब चाहूं इस देह से अलग हो अपने स्वीट होम जा सकती हूं, जब चाहे इस देह में आ सकती हूं.....।

3. सर्वशक्तिवान शिव बाबा मेरे सिर पर छत्रछाया है..... मैं शिव बाबा की छत्रछाया में पूर्ण रूप से सुरक्षित हूं..... बाबा की सर्वशक्तियां मेरे में समाती जा रही हैं...., मैं बाप समान सर्वशक्तियों से संपन्न बनता जा रहा हूँ..., मुझ आत्मा से सर्वशक्तियां चहुं ओर प्रवाहित हो रही हैं।

4. मैं मास्टर ज्ञानसूर्य, ज्ञानसूर्य शिव बाबा की किरणों के नीचे हूं, बाबा से निकल रही असंख्य किरणें मुझ पर पड़ रही हैं..... मैं उन किरणों से नहा रहा हूं, मेरा अंग अंग शीतल हो रहा है, शांत हो रहा है सर्व कर्मेन्द्रियां शांत, शीतल और शुद्व हो रही हैं।

5. मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूं..... जो बाबा के पास शक्तियां हैं वह सब मेरी हैं, बाबा ने अपनी सर्वशक्तियां मुझे दे दी हैं, बाबा ने मुझे कहा बच्चे इन सर्व शक्तियों को विश्वपरिवर्तन के कार्य में, विश्वकल्याण के कार्य में यूज करो, सर्व खजानों को यूज करो, सब को सुख शान्ति का रास्ता बताओ। तुम बच्चे मेरे समान रहमदिल मास्टर दुःख हर्ता सुख कर्ता बन सबको राहत दो।

6. मैं ईष्ट देव विश्वकल्याणकारी हूं, सारे विश्व को पवित्रता, सुख, शान्ति की सकाश देना मेरा परम कर्त्तव्य है। बार बार विश्व के ग्लोब को इमर्ज कर शान्ति देना ही मेरा कार्य है....., प्रकृति के पांचों तत्वों को पावन बनाने का कर्त्तव्य भी मुझे ही करना है।

7. मैं पूर्वज हूं ..... मैं पूर्वज बाबा के साथ कम्बाइन्ड होकर कल्पवृक्ष की जड़ों में बैठा हूं... पूरे कल्पवृक्ष को सकाश दे रहा हूं ..... सर्व आत्माओं को वापस घर जाने का संदेश दे रहा हूं कि अब पावन बनकर वापस अपने स्वीटहोम चलना है.....।